Dr Jaya
Deptt. of Sociology
B.A Part II (Hons.),
Date – 30/05/2020 Paper – 4, Unit
Lecture Series :- 57

Topic :- Types of Sampling

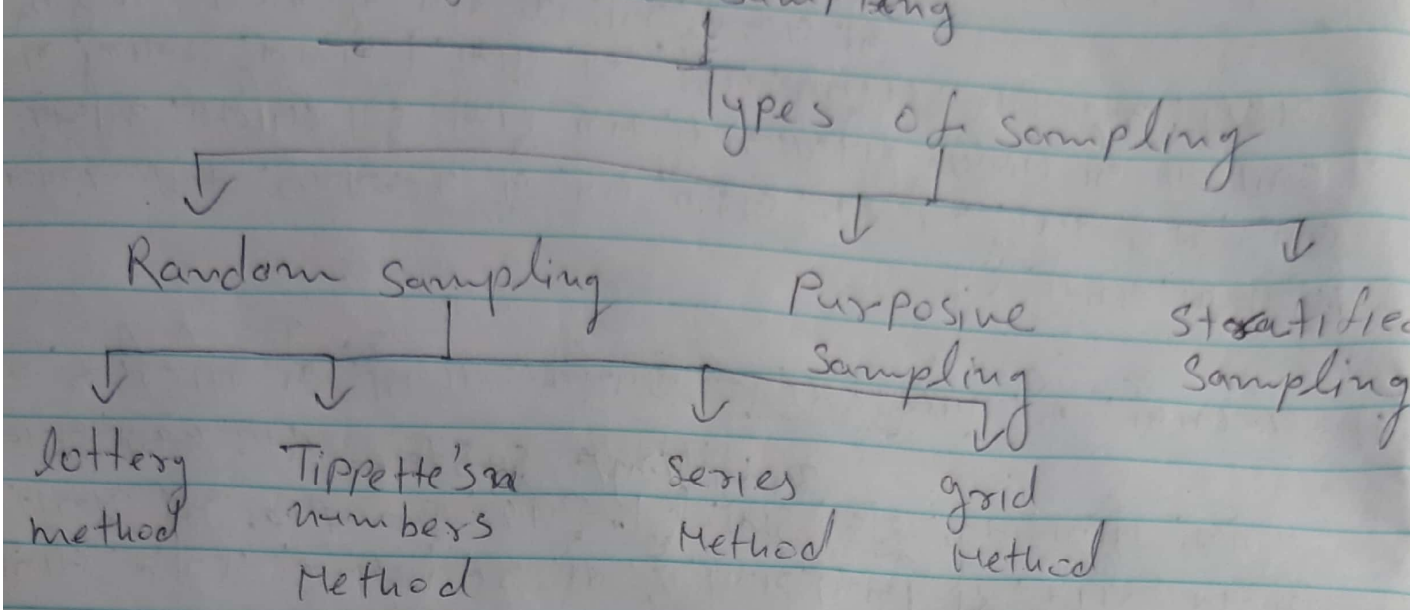

- Types of sampling
  - Random sampling
    - lottery method
    - Tippette's numbers Method
    - Series Method
    - grid Method
  - Purposive Sampling
  - Stratified Sampling

Random Sampling — दैव निदर्शन विधि को उपयोग करने योग्य माना जाता है, जबकि चुनाव की विधि ऐसी हो, कि समग्र की प्रत्येक इकाई तथा तत्व को चुने जाने का समान अवसर हो। दैव-निदर्शन तथा आकस्मिक निदर्शन एक ही विधि नहीं है।

दैव निदर्शन को समानुपातिक निदर्शन भी कहते हैं क्योंकि सैंपल में प्रत्येक वर्ग तथा तत्व उसी अनुपात में होता है, जिस अनुपात में वह समग्र होता है।

ex: यदि 4 हजार विद्यार्थियों में से 1000 विद्या विद्यार्थियों का सैंपल चुना जाये और कुल विद्यार्थियों में 20% हॉस्टल में रहने वाले हों, तो सैंपल में भी करीब-करीब यही प्रतिशत हॉस्टल वालों को होना चाहिए। यद्यपि पूर्णतया समानुपातिक सैंपल का चुनाव अत्यंत कठिन होता है, विशेषकर सामाजिक तथ्यों में जहाँ विविधता

Scanned by CamScanner

की मात्रा अधिक होती है, परन्तु यदि उपयुक्त सीमा तक समानुपातिक हो, तो भी सैम्पल प्रतिनिधित्वपूर्ण माना जाएगा।

दैव निदर्शन विधि के अनुसार सैंपल निकालने की कई विधियाँ प्रचलित हैं। मुख्य विधियाँ इस प्रकार हैं —

1) लाटरी विधि — इस विधि के अनुसार समग्र की इकाइयों के नाम अथवा नम्बर कागज की स्लिपों, गोलियों या साकार आयताकार टुकड़ों पर लिख लिए जाते हैं। इसके बाद उन्हें किसी बर्तन या थाले में डालकर अच्छी तरह हिला दिया जाता है जिससे वे भली भाँति मिल जाएँ। इसके पश्चात इच्छित संख्या में स्लिप बिना देखे निकाल ली जाती है।

2) टिपेट विधि — प्रो० टिपेट चार अंकों वाली 10400 की सूची तैयार की। इन संख्याओं को बिना किसी क्रम के कई पृष्ठों पर लिखा गया है। प्रथम चालीस संख्याओं का नमूना दिया जाता है —

टिपेट संख्याओं द्वारा सैंपल निकालने की विधि इस प्रकार है :- ex — मान लिया कि 600 व्यक्तियों की एक लिस्ट से 20 व्यक्तियों का एक सैंपल चुनना है। इसके लिए प्रत्येक नाम को क्रम संख्या के अनुसार लिखा जायेगा। फिर टिपेट संख्याओं की पुस्तक का कोई एक पृष्ठ खोलकर उसमें से प्रथम 20 नम्बर ले लिए जायेंगे तथा उस क्रम संख्या के लोग सैंपल के लिए चुन लिए जायेंगे। यदि सैंपल की कुल इकाइयों की संख्या कम है तथा प्रथम बीस संख्याओं में कुछ संख्यायें अधिकतम की संख्या से अधिक आती हैं तो उन्हें छोड़ दिया जायेगा तथा इसके स्थान पर अगली संख्यायें ले ली जायेगी। टिपेट की संख्यायें अधिक वैज्ञानिक मानी जाती है तथा उनका उपयोग बहुत अधिक

Scanned by CamScanner

मात्रा में किया जाता है। प्रयोगों के आधार पर यह विधि पर्याप्त शुद्धतापूर्ण सिद्ध हो चुकी है।

3) क्रम सूची का चुनाव :- इस विधि के अनुसार समूह इकाइयों को क्रमानुसार किसी विशेष विधि के अनुसार लिख लिया जाता है। नामों को लिखने में किसी भी विधि का उपयोग हो सकता है - जैसे वर्णात्मक भौगोलिक अथवा अन्य कोई विधि। इसके पश्चात लिस्ट में से 10 वाँ, 20 वाँ या और कोई संख्या छाँट ली जाती है। आरम्भ कहीं से किया जा सकता है। उदाहरण यदि हर 10वीं संख्या चुननी है तो आरम्भ 7 से करके 7, 17, 27, 37 इत्यादि नंबर चुने जा सकते हैं।

4) ग्रिड प्रणाली :- इसका उपयोग क्षेत्रीय चुनाव में किया जाता है। ex मान लिया कि एक नगर से किसी विशेष क्षेत्रफल के 20 ब्लॉक चुने जाने हैं। चुनाव के लिए सेल्यूलाइड अथवा अन्य किसी पारदर्शक पदार्थ की तख्ती का प्रयोग किया जाता है जिस पर वर्गाकार खाने बने रहते हैं। प्रत्येक खाने पर नंबर लिखा रहता है। सबसे पहले दैवनिदर्शन विधि द्वारा यह मालूम किया जाता है कि कौन 20 नंबर चुनने हैं। तब ग्रिड को मानचित्र पर रखकर चुने हुए वर्ग के नीचे पड़ने वाले क्षेत्रफल में निशान लगा दिया जाता है और उन क्षेत्रों को ही सैंपल क्षेत्र मान लिया जाता है।